

अशोक के अभिलेखी

अशोक के शिलालेख (14)

- 1) बिबनार शिलालेख (सौराष्ट्र)
- 2) कालसी शिलालेख (U.P देहरादून)
- 3) शाहवाजगढ़ी शिलालेख (पाकिस्तान)
- 4) मानसैहरा शिलालेख (पं. पाठ)
- 5) च्पीली शिलालेख (उड़ीशा)
- 6) सोपरा शिलालेख (महाराष्ट्र)
- 7) एरंगुडि शिलालेख (आन्ध्र प्रदेश)
- 8) जीवड़ शिलालेख (आन्ध्र प्रदेश)

अशोक के लघु शिलालेख (15)

- 1) रूपनाथ शिला (मध्य प्रदेश)
- 2) सहसराम शिला (दक्षिण बिहार)
- 3) बैराठ शिला (राजस्थान जयपुर) (भाषु)
- 4) गुर्जरा शिला (मध्य प्रदेश)
- 5) मारुकी शिला (हैदराबाद)
- 6) घुमगिरी शिला
- 7) सिहपुर शिला
- 8) जटिग रामेश्वर शिला
- 9) एरंगुडि शिला
- 10) गौविमठ शिला
- 11) पालकि गुंड शिलाए
- 12) राजुल - मडगिरि शिला
- 13) अहरौर लघु शिला
- 14) नई दिल्ली शिला
- 15)

का विवरण

अशोक के स्तम्भ लेख

- 1) हौपरा स्तम्भ (दिल्ली)
- 2) मेरठ स्तम्भ (दिल्ली)
- 3) लौरिया अरराज स्तम्भ (बिहार)
- 4) लौरिया नन्दनगढ़ स्तम्भ (बिहार)
- 5) रामपुरवा स्तम्भ (बिहार)
- 6) प्रयाग स्तम्भ (कौशांबी)

अशोक के लघु स्तम्भ लेख - (6)

- 1) प्रयाग स्तम्भ लेख (कौशांबी)
- 2) सौंपी स्तम्भ लेख
- 3) सारनाथ स्तम्भ लेख (वाराणसी)
- 4) रानी स्तम्भ लेख
- 5) खम्बिनदेई स्तम्भ लेख (नेपाल की तरफ)
- 6) निगली सागर स्तम्भ लेख (नेपाल की तरफ)

अशोक का एक लेख गुहा लेख - जी बराबर (द. बिहार) जै प्राप

अन्य अभिलेख

- 1) शारनए-कुना (कन्पार)
- 2) फुलै-दारुनत (लमगान)
- 3)

अशोक के अभिलेखों का महत्व ->

प्राचीन भारत के इतिहास में अशोक के अभिलेखों का महत्वपूर्ण स्थान है। अशोक के अभिलेखों से तात्कालीन समय की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, प्रशासनिक, व्यापिक तथा उसके व्यक्तिगत जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।

1) सामाजिक महत्व :- अशोक के अभिलेखों का सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। अशोक के अभिलेखों से हमें तात्कालीन सामाजिक व्यवस्था की जानकारी प्राप्त होती है। अशोक का पान्चवां शिलालेख समाज में पंचयित वर्ग-व्यवस्था की जानकारी देता है जिसमें चार-वर्गीय व्यवस्था का उल्लेख है - इसमें चार वर्ग ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय व शूद्र का उल्लेख है। अशोक के नवें शिलालेख में दासों व शूद्रों का उल्लेख है जिससे उस समय के दास प्रथा के प्रचलन की जानकारी प्राप्त होती है। अशोक के तेहरवें शिलालेख में ब्राह्मणों, व अन्य सम्प्रदायों के लोगों व गृहस्थों के लिए व्यवस्थाएँ प्राप्त होती हैं। अशोक के अभिलेखों से तात्कालीन समाज में व्याप्त रिश्ते-रिवाजों व कर्म-काण्डों के बारे में जानकारी मिलती है। अशोक अपने नवें शिलालेख में इन कर्मकाण्डों व रीतियों का विरोध करता है। इस प्रकार अशोक के शिलालेखों से हमें सामाजिक जानकारी प्राप्त होती है।

2) राजनैतिक महत्व :- अशोक के अभिलेखों का राजनैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है। अशोक के अभिलेख अशोक की साम्राज्यिक सीमाओं की जानकारी प्रदान करते हैं। उसके प्राप्त स्थलों से ज्ञात होता है कि अशोक का साम्राज्य उत्तर में कालसी एवं नेपाल की तराई, दक्षिण में बृहन्नगिरि - पिंडपुर आदि स्थलों तथा पूर्व में कसिगं से पं. में पूनागढ़ तथा उत्तर-पश्चिम में कन्पार तक विस्तृत था। अशोक के शार-ए-कुना (कन्पार) अभिलेख से यूनानी साह्य की पुर्णतः होती है कि सेल्यूकस ने काबूल, कन्पार, हिरात, बलुचिस्तान के प्रदेशों में अशोक के चन्द्रगुप्त मौर्य की पुत्री से अशोक के 2 शिलालेख व 23 वें शिलालेख से उसके पुत्री यूनानी राज्यों की व सुदूर दक्षिण के स्वतंत्र भारतीय राज्यों की सूची मिलती है। जिससे उसके साम्राज्य की सीमा निश्चित होती है। अशोक के 13 वें शिलालेख अभिलेख से ज्ञात होता है कि अशोक ने मगध एक ही मुहूर्त के माध्यम से कसिगं का मुहूर्त अशोक के अभिलेखों का राजनैतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है।

3) प्रशासनिक महत्व :- अशोक के अभिलेखों का प्रशासनिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है। अशोक के अभिलेख उसकी प्रशासनिक व्यवस्था की जानकारी देते हैं। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि अशोक का साम्राज्य एक केन्द्रित प्रशासनिक था। अशोक के 4 शिलालेख में कुछ जात्रियों

के अशोक अन्य धर्मों के प्रति सहिष्णु था।
 5) चौथे शिलालेख से ज्ञात होता है कि अशोक ने अपने पूरे साम्राज्य की शक्ति की चमत्कार में लगाया था उसे व भेरिचोष (मृग यौष) के स्थान पर चर्म यौष कहवा है। 8 वे शिलालेख से ज्ञात होता है कि उसने पूर्वगामी राजाओं में प्रचलित विहार यात्रा के स्थान पर चर्म यात्राएं प्रारंभ की थी। प्रथम लघु शिलालेख व 7 स्तम्भ लेख के अनुसार उसने सामान्य मंगलौटसवों के स्थान पर चर्म मंगलौटका प्रचार किया तथा सामान्य समाजों के स्थान पर चर्म समाजों को प्रोत्साहित किया। 5 वे स्तम्भ लेख से ज्ञात होता है कि उसने अनेक अवसरों पर पशुओं की हत्या सर्वथा निषेध कर दिया था। इन प्रचार अशोक के अभिलेखों से अशोक द्वारा अपनाई गई धार्मिक नीति की जानकारी मिलती है।

6) आर्थिक महत्व :- आर्थिक दृष्टि से भी अशोक के अनेक अभिलेख महत्वपूर्ण हैं। अशोक का स्वर्ण नदी के शिलालेख आर्थिक जानकारी प्रदान करने वाला एक महत्वपूर्ण शिलालेख है जिससे ज्ञात होता है कि हिंदू भगवें जाते हैं सुमिनिगामे उवसिठे करे! अठभागिये च ! शिलालेख की यह पंक्तियाँ कर व्यवस्था की जानकारी प्रदान करती हैं कि उस समय उपज का आठवाँ भाग कर के रूप में लिया जाता था। तथा अशोक ने अपनी यात्रा के उपलक्ष में सुमिनी गावें को वसिमुत्त

कर दिया था। बलि एक कर था जो प्रजा से लिया जाता था जिससे अशोक ने समाप्त कर दिया था।

6) व्यापक महत्व :- अशोक ने अभिलेखों से उसके परिवार और व्यक्तिगत जीवन की प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है। 5 वे शिलालेख से ज्ञात होता है कि अशोक के पद से प्रार्थना-वृद्धि के लिए जिन्में अपने उत्तरपुरः थे। उसने काम से द

7) विपिमात्मक व भाषात्मक महत्व :- अशोक के अभिलेखों का विपिमात्मक व भाषात्मक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है अशोक के अभिलेख बहुसंस्कृत व भारत के प्राचीन तम अभिलेख होने के कारण तात्कालिक भारत की विपिमात्मक व भाषात्मक रचना पर भी रीचक प्रकाश डालते हैं। अशोक ने अपने

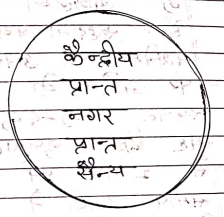
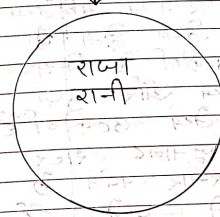
पश्चिमोत्तर प्रदेशी के अभिलेखों में ब्रह्मी लिपि का प्रयोग हुआ है अशोक के शासनात्मक मानसैधरा अभिलेख खरोपटी लिपि के प्राचीनतम लेख है तथा शेष समस्त भारत में उसने अपने अभिलेखों में ब्राह्मी लिपि का प्रयोग किया है। (वैसे लेखन कला अथवा लिपि के विकास का प्रथम उदा. सिन्धु घाटी सभ्यता से प्राप्त लिपि अंकुर मूक से मिलता है लेकिन उस लिपि को अभी तक पढ़ा नहीं गया है?) इस कारण अशोक के अभिलेखों में प्रमुख ब्राह्मी लिपि को ही भारत की प्राचीनतम लिपि मानी गई जिसका उदाहरण अशोक के अभिलेख करते हैं।

8) साहित्यिक महत्व:- अशोक के अभिलेखों का साहित्यिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण स्थान है। अशोक अपने वैराट (भाद्र) शिलालेख में सात लौह शृंगों की बात करता है। तथा अशोक के काल में लौह लिपि का विकास भी प्रारंभ हो गया था। अशोक के अभिलेखों की भाषा में पक्षि, त्रिपिटक की भाषा व वाच्य-विनास का गहरा प्रभाव मिलता है। अशोक के अभिलेख लौहतर सा. के लिख भी महत्वपूर्ण हैं जैसे उसके द्वारा प्रयुक्त शब्द परिस्त्रवे, अपरिस्त्रवे (10 वां शिलालेख) तथा उमीसिनवे (वस्तुम लेख) उपादि शब्द लौह सा. के न होकर धन साहित्य से लिए गए हैं, अतः इस प्रकार अशोक के अभिलेख तत्कालिन भारत के भाषात्मक मानसिद्धि की समझने में महत्वपूर्ण हैं।

अभिलेखों का सामान्य महत्व

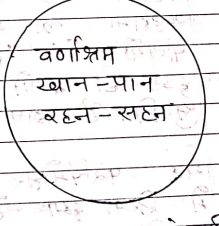
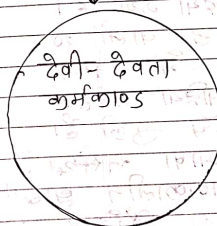
राजनीतिक महत्व

प्रशासनिक महत्व



धार्मिक महत्व

सामाजिक महत्व



आर्थिक महत्व

कला एवं साहित्य

